

अनमोल दावा

कभी-कभी अपमानित होने से हम कमज़ोर नहीं होते, बल्कि हमारी ताकत बढ़ती है।

मिशनरियों के निशाने पर आदिवासी, झारखंड में भी चुनाव को प्रभावित करने कोशिश

आज समय की मांग है कि ईसाई मिशनरियों के खिलाफ जनजाति समाज के संघर्ष को नए सिरे से संकलित किया जाए और उसका प्रचार-प्रसार हो। इसके साथ-साथ जनजातियों की मातृभाषा कला गीत नृत्य संगीत हस्तकला का संरक्षण और संवर्धन किया जाए। इसी के साथ ईसाई मिशनरियों के छल-छल से मतातरण अधिनाम पर रोक लगानी होगी। इसी ही झारखंड ईसाई मिशनरियों के छल-छल से झारखंड बच सकते हैं।

आदिवासी समाज भगवान विरसा मुदा की 150 वीं जयंती मनाने की तैयारी कर रहा है। वर्ष 1875 में 15 नवंबर को झारखंड में 'धर्मी आजा' यानी भगवान विरसा मुदा की जय हुआ था। जनजाति अस्पृष्टि, स्वतंत्रता और संवर्धन का लक्ष्य धर्मी की शरा के लिए बलिदान होने वाले भगवान विरसा मुदा के संघर्ष की सत्यता से जनजाति समाज को अवगत कराना का यह सही अवसर है। भारत में बवर इस्लामिक आक्रान्तों के बारे में जो कुछ लिखा और कहा जाता है, वह विदेश से आया तित इस्लाम, ईसाईत और वामपंथ का आधा है। यह समझने की अवश्यकता है कि ईसाई मिशनरियों भी हिंदुओं और आदिवासी खलूपत्र करती रही हैं और आज भी कर रही हैं। कुछ समय पहले मिशनरियों के मुख्यमंत्री के अमेरिका में दिए गए बयान से ऐसा प्रतीत होता है कि ईसाई मिशनरियों भी देश का विभाजन करना चाहती है।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने पहले व्यापार और पिर छल-कपट से भारत में राजनीति का नाम पर रही के जर्मानों को आगे चारखंड रटू शुरू की। इस लूट का विरोध करने वालों को चौक-चारहे पर कोड़ी मारने, फासी पर लकाने और मर्दियों को तोड़ने जैसे कल्प किए गए। बाबा तिलका माझी को मीलों घसीटते हुए खून में डूबे उनके शरीर को पेंड पर लकड़ा का खुलाअ फासी देना इसका उदाहरण है। 23 जून, 1757 को लासी युद्ध के बाद अंग्रेजों का तलातीन बंगल पर नियंत्रण हो गया, जिसमें आज के बिहार, ओडिशा तथा झारखंड शामिल थे। फिर 1765 में अंग्रेजों ने उत्तराखण्ड का विभाजन की अधिकार प्राप्त कर लिया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने तीर्थयात्रियों पर प्रतिवर्धन लगाया। उत्तराखण्ड का एक संघर्ष को चम्पानी विद्रोह कहा जाता है। इसी संघर्ष को आनन्द में रखकर बैकिंग चांदी का पूर्णिया था। वह अंदोलन लागभाग चार दशक तक चला। बाद में 1771 से 1784 तक ब्रिटिश सत्ता के विद्रोह संघर्ष छेड़ने वाले 'जबरा पहाड़िया' उर्फ बाबा तिलका माझी को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पहले सेनानी के नाम से जाना जाता है।

आज की पीढ़ी को उक्ते बारे में बहुत कम जानकारी है। 1857 के पहले 1753 में सिद्धू मुर्मू और कान्हू मुर्मू ने जंगल तराई में विद्रोह शासन के दमन और शोपण के खिलाफ गोरी या मरो-अंग्रेजों हमारी माझी छोड़ी भवितव्यमय विद्रोह कराने को डाने के लिए बवर तरीके से फासी देते थे, ताकि कोई उक्ते शासन के खिलाफ अपनी आवाज न उठा सके। बाबा तिलका माझी, भगवान विरसा मुदा तथा सिद्धू कान्हू मुर्मू के बारे में तो कुछ साहित्य उपलब्ध भी है, पर 1790 के तमाङ विद्रोह, 1800 से 1818 तक चले चेरो अंदोलन तथा 1820-21 के हो विद्रोह, कोल विद्रोह, ताना भगत आंदोलन अदि के बारे में बराबर उत्तराखण्ड वर्ष 1857 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के दमन और शोपण के खिलाफ देश में चले अनेक संघर्षों से डर कर ईसाई मिशनरियों ने जनजाति बहुत इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के नाम पर आदिवासीयों के ईसाइकण का बड़ी शुरू किया और शिक्षा की आड़ में रान मानवाधिकारी थोपना शुरू कर दिया।

देश राजनीतिक रूप से भले आजद हो गया है, और मानविक रूप से आज भी गुलाम है। ईसाइकण जनजाति संघर्ष के बारे में बहुत कम लिखा गया है, किंतु लिलाका माझी की संतानों यानी मुंदी की आबादी 12,29,221 है, जिसमें से 4,03,466 यानी 32.82 प्रतिशत ईसाई हो गए हैं लिलाका माझी की संतानों यानी संताल की आबादी 27,54,723 है, जिसमें से 2,36,304 यानी 8.57 प्रतिशत ईसाई हो गई है। मुंदा और संताल की ही तरह 26.16 लाख भवित्य उपलब्ध भी है, पर 1790 के तमाङ विद्रोह, 1800 से 1818 तक चले चेरो अंदोलन तथा 1820-21 के हो विद्रोह, कोल विद्रोह, ताना भगत आंदोलन अदि के बारे में बराबर उत्तराखण्ड वर्ष 1757 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के दमन और शोपण के खिलाफ देश में चले अनेक संघर्षों से डर कर ईसाई मिशनरियों ने जनजाति बहुत इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के नाम पर आदिवासीयों के ईसाइकण का बड़ी शुरू किया और शिक्षा की आड़ में रान मानवाधिकारी थोपना शुरू कर दिया।

देश राजनीतिक रूप से भले आजद हो गया है, और मानविक रूप से आज भी गुलाम है। ईसाइकण जनजाति संघर्ष के बारे में बहुत कम लिखा गया है, किंतु लिलाका माझी की संतानों यानी मुंदी की आबादी 12,29,221 है, जिसमें से 4,03,466 यानी 32.82 प्रतिशत ईसाई हो गए हैं लिलाका माझी की संतानों यानी संताल की आबादी 27,54,723 है, जिसमें से 2,36,304 यानी 8.57 प्रतिशत ईसाई हो गए है। मुंदा और संताल की ही तरह 26.16 लाख भवित्य उपलब्ध भी है, पर 1790 के तमाङ विद्रोह, 1800 से 1818 तक चले चेरो अंदोलन तथा 1820-21 के हो विद्रोह, कोल विद्रोह, ताना भगत आंदोलन अदि के बारे में बराबर उत्तराखण्ड वर्ष 1757 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के दमन और शोपण के खिलाफ देश में चले अनेक संघर्षों से डर कर ईसाई मिशनरियों ने जनजाति बहुत इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के नाम पर आदिवासीयों के ईसाइकण का बड़ी शुरू किया और शिक्षा की आड़ में रान मानवाधिकारी थोपना शुरू कर दिया।

देश राजनीतिक रूप से भले आजद हो गया है, और मानविक रूप से आज भी गुलाम है। ईसाइकण जनजाति संघर्ष के बारे में बहुत कम लिखा गया है, किंतु लिलाका माझी की संतानों यानी मुंदी की आबादी 12,29,221 है, जिसमें से 4,03,466 यानी 32.82 प्रतिशत ईसाई हो गए हैं लिलाका माझी की संतानों यानी संताल की आबादी 27,54,723 है, जिसमें से 2,36,304 यानी 8.57 प्रतिशत ईसाई हो गए है। मुंदा और संताल की ही तरह 26.16 लाख भवित्य उपलब्ध भी है, पर 1790 के तमाङ विद्रोह, 1800 से 1818 तक चले चेरो अंदोलन अदि के बारे में बराबर उत्तराखण्ड वर्ष 1757 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के दमन और शोपण के खिलाफ देश में चले अनेक संघर्षों से डर कर ईसाई मिशनरियों ने जनजाति बहुत इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के नाम पर आदिवासीयों के ईसाइकण का बड़ी शुरू किया और शिक्षा की आड़ में रान मानवाधिकारी थोपना शुरू कर दिया।

देश राजनीतिक रूप से भले आजद हो गया है, और मानविक रूप से आज भी गुलाम है। ईसाइकण जनजाति संघर्ष के बारे में बहुत कम लिखा गया है, किंतु लिलाका माझी की संतानों यानी मुंदी की आबादी 12,29,221 है, जिसमें से 4,03,466 यानी 32.82 प्रतिशत ईसाई हो गए हैं लिलाका माझी की संतानों यानी संताल की आबादी 27,54,723 है, जिसमें से 2,36,304 यानी 8.57 प्रतिशत ईसाई हो गए है। मुंदा और संताल की ही तरह 26.16 लाख भवित्य उपलब्ध भी है, पर 1790 के तमाङ विद्रोह, 1800 से 1818 तक चले चेरो अंदोलन अदि के बारे में बराबर उत्तराखण्ड वर्ष 1757 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के दमन और शोपण के खिलाफ देश में चले अनेक संघर्षों से डर कर ईसाई मिशनरियों ने जनजाति बहुत इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के नाम पर आदिवासीयों के ईसाइकण का बड़ी शुरू किया और शिक्षा की आड़ में रान मानवाधिकारी थोपना शुरू कर दिया।

देश राजनीतिक रूप से भले आजद हो गया है, और मानविक रूप से आज भी गुलाम है। ईसाइकण जनजाति संघर्ष के बारे में बहुत कम लिखा गया है, किंतु लिलाका माझी की संतानों यानी मुंदी की आबादी 12,29,221 है, जिसमें से 4,03,466 यानी 32.82 प्रतिशत ईसाई हो गए हैं लिलाका माझी की संतानों यानी संताल की आबादी 27,54,723 है, जिसमें से 2,36,304 यानी 8.57 प्रतिशत ईसाई हो गए है। मुंदा और संताल की ही तरह 26.16 लाख भवित्य उपलब्ध भी है, पर 1790 के तमाङ विद्रोह, 1800 से 1818 तक चले चेरो अंदोलन अदि के बारे में बराबर उत्तराखण्ड वर्ष 1757 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के दमन और शोपण के खिलाफ देश में चले अनेक संघर्षों से डर कर ईसाई मिशनरियों ने जनजाति बहुत इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के नाम पर आदिवासीयों के ईसाइकण का बड़ी शुरू किया और शिक्षा की आड़ में रान मानवाधिकारी थोपना शुरू कर दिया।

देश राजनीतिक रूप से भले आजद हो गया है, और मानविक रूप से आज भी गुलाम है। ईसाइकण जनजाति संघर्ष के बारे में बहुत कम लिखा गया है, किंतु लिलाका माझी की संतानों यानी मुंदी की आबादी 12,29,221 है, जिसमें से 4,03,466 यानी 32.82 प्रतिशत ईसाई हो गए हैं लिलाका माझी की संतानों यानी संताल की आबादी 27,54,723 है, जिसमें से 2,36,304 यानी 8.57 प्रतिशत ईसाई हो गए है। मुंदा और संताल की ही तरह 26.16 लाख भवित्य उपलब्ध भी है, पर 1790 के तमाङ विद्रोह, 1800 से 1818 तक चले चेरो अंदोलन अदि के बारे में बराबर उत्तराखण्ड वर्ष 1757 से 1857 के बीच ईस्ट इंडिया कंपनी के दमन और शोपण के खिलाफ देश में चले अनेक संघर्षों से डर कर ईसाई मिशनरियों ने जनजाति बहुत इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के नाम पर आदिवासीयों के ईसाइकण का बड़ी शुरू किया और शिक्षा की आड़ में रान मानवाधिकारी थोपना शुरू कर दिया।

देश राजनीतिक रूप से भले आजद हो गय

समिति प्रबंधकों का हड्डताल खत्म, समर्थन मूल्य में धान खरीदी को मिलेगी गति

राजनांदगांव (दावा)। गत 4 नवंबर से छत्तीसगढ़ प्रदेश सहकारी समिति कर्मचारियों के अपने 3 सूत्रीय मांगों को लेकर चल हैं अंदेलन का सुदर पटांगी हो गया है। समिति प्रबंधकों के हड्डताल खत्म होते ही अंदेलन का सुदर 14 नवंबर से किसानों से समर्थन मूल्य की जाने वाली धान खरीदी में अपेक्षित गति आएगी।

बता दें कि सहकारी समिति प्रबंधकों एवं कर्मचारियों का बीते सालाह भर तक लगातार अपनी मांगों को लेकर धरा रहा। इस घटना में शामिल होने जाते समय राजनांदगांव पटांगी और मैं समिति के एक सदस्य सड़क हड्डताल के शिकार हो गया। इस घटना में एक की मौत व दूसरा व्यक्ति बूढ़ी तरह जख्मी हो गया जिसका इलाज जारी है। सहकारी समिति कर्मचारी संघ द्वारा संभ के बुक्स सदस्य के परिजनों के लिए शासन को 10 लाख मुआवजे की मांग की है वहीं घायल के उचित इलाज के व्यवस्था की मांग की गई है।

मुख्यमंत्री के साथ हुई बैठक

बता दें कि सहकारी समिति कर्मचारी संघ की 10 नवंबर को मुख्यमंत्री विष्णु देव सायक के उपस्थिति में अमंत्री शयम बिहारी जायसवाल, अशोक बजाज खाद्य



सचिव रिचा शर्मा सहकारिता सचिव सहकारिता कर्मचारियों के अधिकारियों के साथ बैठक हुई जिसमें सकारात्मक चर्चा हुई और 11 नवंबर एवं 12 नवंबर को खाद्य सचिव का लिखित अंदेश मिलने के बाद अंदेलन को समाप्त कर दिया है।

सेवा नियम में बेतन द्वारा दूसरा

मांग में प्रबंधकीय अनुदान के लिए

अंत विभाग की कमेटी का गठन 28 फरवरी धान उत्तर 28 फरवरी के बाद शेष धान में सुखद का प्रावधान का लिखित अंदेश मिलने पर सभी का आभार व्यक्त करते हुए छत्तीसगढ़ सहकारी समिति

० मुख्यमंत्री के साथ बैठकर समिति प्रबंधकों की हुई सार्थक चर्चा

० कल 14 नवंबर से निर्बाध रूप से होगी धान खरीदी

कर्मचारी संघ द्वारा अंदेलन समाप्त कर दिया गया है।

काम पर लौटेंगे सभी कर्मचारी

जिला सहकारी समिति कर्मचारी संघ के संयुक्त सचिव व प्रदेश छत्तीसगढ़ सहकारी समिति के महासचिव ईश्वर प्रीवास ने बताया कि मुख्यमंत्री विष्णु देव सायक सदित शासन के बीच व अधिकारियों के संयुक्त सचिव व प्रदेश छत्तीसगढ़ सहकारी समिति के महासचिव ईश्वर प्रीवास ने बताया कि अपने-अपने काम पर धान खरीदी के उचित इलाज के व्यवस्था की मांग की गई है।

तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिन कुशल सूरी महाराज की 74वीं जन्म जयंती मनाई गई



राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। शहर के पेंड्री शिथ में मेडिकल कालेज अस्पताल में पदस्थ एक 29 वर्षीय महिला डाक्टर की मौत हो गई है। मौत का कारण हार्ट अटैक अस्पताल के पीओआरओ द्वारा बताया गया कि महिला चिकित्सक भाविका डाक्टर मेडिकल कालेज अस्पताल में कैन्युअल्टी डाक्टर के रूप में पदस्थ थी। महिला चिकित्सक रोजी की तरह नियमित द्वायरी के लिए अपने घर में मेडिकल कालेज अस्पताल जैन की तैयारी में थी उसी दौरान उक्त महिला आत्मरही होगी। श्री नैनी श्रेताम्बर मृतप्रजक्ष कंसं एवं श्री दादा गुरुभक्त अंदेलन के बाद शेष धान में हूंगा रात्रि 108 दीपक की महाआत्मी होगी। श्री नैनी श्रेताम्बर को स्थानीय दादा श्री जिनकुशुल अस्पताल पहुंचने से पहले ही डॉ भाविका ने अपना बहुमूल्य समय निकाल कर अंदेलन की दृष्टियां देखी रहीं थीं। जिसे देखते ही उक्ते क्षितिज लाल जैन ने डॉ भाविका के बाद शेष धान में हूंगा रात्रि 108 दीपक की महाआत्मी होगी। इस अंदेलन की विष्णु देव सायक ने उक्ते क्षितिज लाल को द्वायरी के लिए अपनी धान खरीदी के उपर धान खरीदी को देता है। इस अंदेलन की विष्णु देव सायक ने उक्ते क्षितिज लाल को देता है।

परम् गुरु भक्तीमती सायाराहाई

(86 वर्ष), ध.प.

स्कूल उत्सव गोलखा का वाद

परम् गुरु भक्तीमती सायाराहाई

(86 वर्ष), ध.प.

युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों नृत्य जै निमाता, मालुपुर में प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले, जैन जगत के तृतीय दादा गुरुदेव प्रातः स्मरण युग्मान दादा श्री जिनकुशुलसूरजी का 74वीं जन्म जयंती विष्णु देव सायम भावों से प्राप्त: 7:30 बजे से श्री दादा गुरुदेव की पूजा, विनय वैद एवं संजय बागरेना एवं इहीं के द्वारा रात्रि 8 बजे से श्री गुरु

राजनांदगांव (दावा)। प्रकट प्रभावी, कलिकाल कल्पतरू, भक्तजन वत्सल, शासन प, भा व क, अतिशयधरी, हाजारों